IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

लोक जीवन और रामचरित मानस : एक अध्ययन

डॉ. तृप्ति उकास
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी
प्रधानमंत्री कॉलेज ऑफ एक्सीलेंस
शासकीय महाकोशल स्वशासी अग्रणी महाविद्यालय, जबलपुर, म. प्र.

रामाय रामभद्राय रामचन्द्राय वेधसे।
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः ॥

– **(वा.रा. पृष्ठ-03)**

सारांश

भारतीय सांस्कृतिक चेतना के केंद्र में यदि किसी एक आदर्श पुरुष का सर्वाधिक व्यापक एवं शाश्वत स्वरूप प्रतिष्ठित है, तो वह भगवान श्रीराम का है। भारतीय समाज की संरचना में वे केवल धार्मिक आस्था के केंद्र नहीं, बल्कि लोक जीवन की नैतिकता, सांस्कृतिक मर्यादा, सामाजिक समरसता तथा मानवीय मूल्यों के आधार स्तंभ हैं। भारतीय लोक जीवन में श्रीराम का प्रभाव इतना व्यापक है कि लोक गीतों, लोक कथाओं, लोक नाट्यों, कथा वाचन परम्पराओं, पर्व-उत्सवों तथा सामान्य सामाजिक व्यवहार तक उनका स्मरण निरंतर उपस्थित अनुभूत होता है। वे ऐसे लोक नायक हैं, जो धर्म, सत्य, त्याग, करुणा, लोक मंगल और आदर्श शासन व्यवस्था के भारतीय प्रतिमान को मूर्त रूप प्रदान करते हैं।

गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरित मानस के माध्यम से राम को लोकभाषा में प्रतिष्ठित कर भारतीय जनमानस के अत्यंत निकट स्थापित किया। तुलसी के राम केवल अवतारी पुरुष नहीं, बल्कि लोक मंगलकारी चेतना के प्रतिनिधि हैं। वे समाज को मर्यादा, समरसता, न्याय और धर्म का मार्ग प्रदान करते हैं। मध्यकालीन सामाजिक विघटन और सांस्कृतिक संकट के समय तुलसीदास ने रामकथा के माध्यम से भारतीय समाज को नैतिक आधार प्रदान किया। इसी कारण लोक में तुलसीदास के राम की स्वीकार्यता अत्यंत व्यापक और स्थायी रही है।

वर्तमान समय में जब समाज मूल्यहीनता, सांस्कृतिक विघटन, स्वार्थ, हिंसा और नैतिक संकट जैसी समस्याओं से जूझ रहा है, तब राम का आदर्श पुनः प्रासंगिक हो उठा है। राम भारतीय लोक मानस की उस सांस्कृतिक ऊर्जा के प्रतीक हैं जो मानवता, सहअस्तित्व, करुणा और धर्ममय जीवन की प्रेरणा प्रदान करती है। अतः यह कहा जा सकता है, कि लोकपरम्परा में राम केवल धार्मिक श्रद्धा के विषय नहीं, बल्कि भारतीय सभ्यता और संस्कृति की जीवित आत्मा हैं।

बीज शब्द

लोक परम्परा, राम, तुलसीदास, रामचरित मानस, लोक चेतना, राम राज्य, भारतीय संस्कृति, लोक मंगल, मानवीय मूल्य।

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति का समग्र स्वरूप यदि किसी एक आदर्श चरित्र में सर्वाधिक सशक्त रूप से अभिव्यक्त हुआ है, तो वह चरित्र भगवान श्रीराम का है। राम भारतीय जनमानस में केवल ईश्वर के रूप में प्रतिष्ठित नहीं हैं, बल्कि वे भारतीय जीवन-मूल्यों, सांस्कृतिक चेतना, लोकधर्म और नैतिक मर्यादाओं के सर्वोच्च प्रतीक भी हैं। वह जन-जन की आत्मा में इतने गहरे रूप से समाहित हैं कि लोक जीवन का कोई भी पक्ष उनसे अछूता नहीं दिखाई देता। गाँवों की चौपालों से लेकर लोक गीतों, राम लीलाओं, धार्मिक अनुष्ठानों तथा सामाजिक व्यवहार तक राम की उपस्थिति सहज रूप से अनुभव की जा सकती है। अस्तु श्रीमद्भगवद्गीता में कहा गया है—

"यद्यदाचरति श्रेष्ठस्तत्तदेवेतरो जनः।
स यत्प्रमाणं कुरुते लोकस्तदनुवर्तते॥" (शुकदेवानन्द,पृ. 3)

अर्थात श्रेष्ठ पुरुष जैसा आचरण करते हैं, सामान्य जन भी उसी का अनुसरण करते हैं। यही कारण है कि भारतीय संस्कृति में राम केवल पौराणिक पात्र नहीं, बल्कि लोक जीवन की शाश्वत चेतना बन जाते हैं।

वाल्मीकि के राम जहाँ मानवीय संवेदनाओं से युक्त आदर्श पुरुष हैं, वहीं तुलसीदास के राम लोक मंगलकारी ब्रह्म स्वरूप के रूप में प्रतिष्ठित दिखाई देते हैं। तुलसीदास ने मानस के माध्यम से राम को संस्कृत की विद्वत् परम्परा से निकालकर लोक भाषा में स्थापित किया। परिणाम स्वरूप राम भारतीय जनमानस के अत्यंत निकट आ गए।

"जग मंगल गुनग्राम राम के।
दानि मुकुति धन धरम धाम के॥" (बा.का.-37,)

मध्यकालीन भारतीय समाज राजनीतिक अस्थिरता, सामाजिक विघटन और धार्मिक आडम्बरों से गुजर रहा था। ऐसे समय में तुलसीदास ने राम कथा के माध्यम से भारतीय समाज को नैतिक आधार प्रदान किया। तुलसी के राम समाज को मर्यादा, कर्तव्य, त्याग और धर्म का मार्ग दिखाते हैं। वे ऐसे आदर्श शासक हैं, जिनके लिए लोक कल्याण सर्वोपरि है। उनके चिंतन मात्र से जीव के जनम जनम के कलमश धुल जाते हैं। उनके ध्यान से ऋषि-मुनि दार्शनिक तत्वों का, ज्ञान-विज्ञान के धरातल पर भी सहज ही विहार करने में सक्षम हो जाते हैं-

"सुकृत पुंज मंजुल अलि माला ।
ग्यान बिराग बिचार मराला ॥
अरथ धरम कामादिक चारी।
कहब ग्यान बिग्यान बिचारी ॥" (बा.का.-37)

वर्तमान में जब समाज मूल्य-संकट, हिंसा, स्वार्थ और सांस्कृतिक असंतुलन जैसी समस्याओं से जूझ रहा है, तब श्रीराम का पुण्यचरित नितान्त निश्चल शीतल बयार सम आनन्दित और भावविभोर कर देने वाला है। राम केवल अतीत के सांस्कृतिक नायक नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य के भी नैतिक पथ प्रदर्शक हैं। वह त्रिकालज्ञ हैं, आपादमस्तक अविराम सुख-सौभाग्य आनन्द के दाता हैं।

लोक चेतना में राम का स्वरूप

भारतीय लोकमानस में राम अद्भुत चरित हैं, जिनकी उपस्थिति जीवन के प्रत्येक आयाम में अनुभव की जाती है। लोकगीतों, भजनों, संस्कार-गीतों, कथाओं तथा दैनिक अभिवादन तक में राम का स्मरण भारतीय समाज की गहरी सांस्कृतिक जड़ों को अभिव्यक्त करता है। भारतीय लोकजीवन में 'राम' केवल ईश्वर का नाम नहीं, बल्कि विश्वास, मर्यादा और आत्मीयता का सांस्कृतिक प्रतीक है। उनके चरित का गान मनोहारी है तथा उनके समान ही उनकी गाथा का गुन गान भी शीतल व्यापक निर्झरणी है-

"राम नाम गुन चरित सुहाए ।
जनम करम अगनित श्रुति गाए ॥
जथा अनंत राम भगवाना ।
तथा कथा कीरति गुन नाना॥" (बा.का.-114)

तुलसीदास के राम कहो या महर्षि वाल्मीकि के; वो प्रत्येक भाव में प्रत्येक वर्ग के प्रति समान संवेदना रखते हैं। निषादराज, शबरी, केवट और वानर समुदाय के साथ उनका व्यवहार भारतीय सामाजिक समरसता की श्रेष्ठ मिसाल प्रस्तुत करता है जो नितान्त स्नेह से आपूरित है-

रामहि केवल प्रेम पियारा। जानि लेहु जो जाननिहारा॥" (अ.का., दोहा-35)

तुलसीदास के राम लोकमंगलकारी ब्रह्मस्वरूप हैं। वे धर्म की रक्षा और लोककल्याण के लिए अवतार ग्रहण करते हैं—

"जब-जब होइ धरम कै हानी।
बाढ़हि असुर अधम अभिमानी॥
तब-तब प्रभु धरि विविध शरीरा।
हरहिं कृपानिधि सज्जन पीरा॥" (बा.का.-120)

राम का चरित्र भारतीय समाज में समानता और सहअस्तित्व की चेतना को भी सुदृढ़ करता है—

"जाति-पाँति कुल धरम बड़ाई।
धन बल परिजन गुन चतुराई॥
भगति हीन नर सोहइ कैसा।
बिनु जल बारिद देखिअ जैसा॥" (उ.का.-44)

लोकभाषा की सांस्कृतिक चेतना

गोस्वामी तुलसीदास द्वारा रचित रामचरितमानस भारतीय लोकजीवन का सर्वाधिक प्रभावशाली महाकाव्य माना जाता है। संस्कृत भाषा में सीमित रामकथा को तुलसीदास ने अवधी जैसी लोकाभिमुख भाषा में प्रस्तुत कर जनसाधारण तक पहुँचाया। यही कारण है कि रामचरितमानस केवल साहित्यिक ग्रंथ न रहकर लोकजीवन की सांस्कृतिक धरोहर बन गया। विवाह, जन्मोत्सव तथा धार्मिक अनुष्ठानों में मानस की चौपाइयों का गायन आज भी व्यापक रूप से किया जाता है। तुलसीदास ने धर्म को कर्मकांड से अलग कर लोक मंगल और मानवता से जोड़ा है। परकल्याण का भाव तो भारतीय संस्कृति आधार है –

"परहित सरिस धरम नहि भाई। परपीड़ा सम नहि अधमाई॥" (उ.का.-41)

इन्हीं अद्वितीय गुणों की समष्टि से ओतप्रोत रामचरित मानस ने भारतीय सांस्कृतिक एकता को भी सुदृढ़ किया। उत्तर भारत से लेकर दक्षिण भारत तक मानस की स्वीकार्यता यह सिद्ध करती है कि तुलसीदास ने राम कथा को सम्पूर्ण भारतीय समाज की सांस्कृतिक चेतना से जोड़ दिया। अमृतलाल नागर ने मानस का हंस में तुलसीदास के सांस्कृतिक प्रभाव का उल्ले करते हुए उन्हें भारतीय लोक मानस का महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक निर्माता माना है।

लोक नाट्य परम्परा और राम लीला का सांस्कृतिक स्वरूप

भारतीय लोकसंस्कृति में राम लीला केवल धार्मिक आयोजन नहीं, बल्कि सामूहिक सांस्कृतिक चेतना, लोक नाट्य परम्परा और सामाजिक सहभागिता का सशक्त माध्यम है। राम लीला ने लोक जीवन को धर्म, नीति, मर्यादा और सांस्कृतिक मूल्यों से निरंतर जोड़े रखा।

राम लीला का उद्देश्य केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि लोक शिक्षा और सांस्कृतिक जागरण भी रहा है। इसके माध्यम से समाज को सत्य, त्याग, धर्म और न्याय की शिक्षा दी जाती रही। वास्तविकता तो यह है कि यह चरित मानव के समस्त तापों का सहज ही हरण करने में सक्षम है-

"दैहिक दैविक भौतिक तापा। राम राज नहि काहुहि ब्यापा॥" (उ.का.-20)

वाराणसी की राम नगर राम लीला, अयोध्या की राम लीला, कुमायूँ की संगीत प्रधान राम लीला तथा राजस्थान की ढाई कड़ी राम लीला भारतीय लोक नाट्य परम्परा की महत्त्वपूर्ण धरोहर हैं। यूनेस्को द्वारा वर्ष 2008 में राम लीला को "मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत" घोषित किया जाना, इसकी वैश्विक सांस्कृतिक महत्ता का प्रमाण है।

विश्व परम्परा में राम कथा का विस्तार और सांस्कृतिक प्रभाव

राम कथा भारतीय संस्कृति की ऐसी सार्वभौमिक धरोहर है, जिसने सम्पूर्ण विश्व की अनेक सभ्यताओं और संस्कृतियों को प्रभावित किया है। नेपाल, थाईलैंड, इंडोनेशिया, कंबोडिया, मलेशिया और म्यांमार जैसे देशों में राम कथा विविध सांस्कृतिक रूपों में प्रचलित है।

थाईलैंड का राष्ट्रीय महाकाव्य 'रामाकियन' रामायण पर आधारित है। कंबोडिया में रामायण 'रीमकर' नाम से प्रसिद्ध है, जबकि इंडोनेशिया में रामायण आधारित नृत्य-नाटिकाएँ और कठपुतली नाटक आज भी व्यापक रूप से प्रस्तुत किए जाते हैं।

कामिल बुल्के ने अपने शोधग्रंथ 'राम कथा : उत्पत्ति और विकास' में विश्वभर में प्रचलित राम कथा के विविध स्वरूपों का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत किया है। उनके अनुसार राम कथा के सैकड़ों रूप विश्व की विभिन्न संस्कृतियों में प्रचलित हैं।

राम कथा की यह वैश्विक यात्रा भारतीय संस्कृति की समन्वयशीलता और मानवतावादी दृष्टिकोण का प्रतीक है। वास्तव में राम विश्व संस्कृति के ऐसे आदर्श नायक हैं, जिनकी प्रासंगिकता समय और सीमाओं से परे है।

राम राज्य और लोक मूल्य

भारतीय सांस्कृतिक परम्परा में 'रामराज्य' केवल राजनीतिक अवधारणा नहीं, बल्कि आदर्श सामाजिक व्यवस्था, नैतिक शासन और लोक कल्याण का प्रतीक है। तुलसीदास ने राम राज्य का चित्रण ऐसे आदर्श समाज के रूप में किया है, जहाँ न्याय, समानता, धर्म और मानवीय संवेदनाओं का संतुलित समन्वय विद्यमान हो। क्योंकि यह तो सत्य

है कि, जब तक समाज एक सूत्र में बद्ध नहीं होगा तबतक स्वधर्म, संस्कृति, सभ्यता, साहस, सौहार्द से भरापूरा न हो सकेगा इसीलिए तुलसीदास जी कहते हैं कि,-

"सब नर करहिं परस्पर प्रीती।चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती॥"(उ.का.-20)

महात्मा गाँधी ने भी आदर्श शासन व्यवस्था के रूप में 'रामराज्य' की संकल्पना को स्वीकार किया था। भारतीय धर्मशास्त्रों में भी धर्म और लोकमंगल को सर्वोच्च माना गया है— "धर्मो रक्षति रक्षितः।" (मनुस्मृति)

स्वामी शुकदेवानन्द जी के अनुसार भगवान श्रीराम के आचरण तथा उपदेशों का प्रभाव समाज पर इस प्रकार पड़ा कि जनता शास्त्रानुमोदित कर्तव्यों और आत्मसंयम की ओर उन्मुख हो गई। (शुकदेवानन्द, पृ.78)

वाल्मीकि रामायण और अध्यात्मरामायण में राम का दार्शनिक स्वरूप

श्रीराम का स्वरूप गान केवल मानस का ही विषय नहीं है वरन् उनकी गाथा तो वेदपुराण और इतिहास तक में व्याप्त है। लोक नायक अथवा आदर्श पुरुष ही नहीं; वे दार्शनिक और आध्यात्मिक चेतना के भी महत्त्वपूर्ण प्रतीक हैं। वाल्मीकि रामायण में राम को मानवीय संवेदनाओं से युक्त आदर्श पुरुष के रूप में चित्रित किया गया है। वे दुःख, करुणा, संघर्ष, कर्तव्य और धर्म के मध्य संतुलन स्थापित करने वाले मर्यादित नायक हैं। वाल्मीकि के राम मानव जीवन की जटिल परिस्थितियों में आदर्श आचरण का मार्ग प्रशस्त करते हैं।

वाल्मीकि रामायण में राम के चरित्र का मूल आधार धर्म है। वे व्यक्तिगत सुख से अधिक लोक धर्म और कर्तव्य को महत्व देते हैं। पिता के वचन की रक्षा के लिए राज्य का त्याग तथा प्रजा के हित को सर्वोपरि मानना उनके आदर्श चरित्र को स्थापित करता है। यही कारण है कि वाल्मीकि ने राम को 'धर्मज्ञ' और 'सत्यप्रतिज्ञ' कहा है -"रामो विग्रहवान् धर्मः।" (वा. रा., अयो.का.)

अर्थात राम स्वयं धर्म के साकार स्वरूप हैं। यह दृष्टि भारतीय सांस्कृतिक चेतना में राम को नैतिक आदर्श के रूप में प्रतिष्ठित करती है।

अध्यात्मरामायण में राम का स्वरूप अधिक आध्यात्मिक और दार्शनिक हो जाता है। वहाँ राम को परब्रह्म तथा समस्त सृष्टि के आधार के रूप में चित्रित किया गया है। अध्यात्मरामायण में भक्ति, ज्ञान और वैराग्य के समन्वय के माध्यम से राम को अद्वैत चेतना का प्रतीक माना गया है - "रामोऽखिलं जगत्।" (अध्यात्मरामायण)

इस प्रकार वाल्मीकि रामायण और अध्यात्मरामायण दोनों ही भारतीय संस्कृति में राम के बहुआयामी स्वरूप को स्थापित करते हैं।

भारतीय लोक संस्कारों और जन जीवन में राम

भारतीय लोक जीवन में राम केवल धार्मिक उपासना के विषय नहीं, बल्कि सामाजिक संस्कार और सांस्कृतिक व्यवहार का भी अभिन्न अंग हैं। जन्म से मृत्यु तक भारतीय समाज के अनेक संस्कारों में राम का स्मरण सहज रूप से दिखाई देता है। ग्रामीण समाज में 'राम-राम' का अभिवादन आत्मीयता, विश्वास और सांस्कृतिक निकटता का प्रतीक माना जाता है।

भारतीय लोक गीतों और संस्कार-गीतों में राम कथा के विविध प्रसंगों का अत्यंत व्यापक प्रभाव दिखाई देता है। विवाह गीतों में राम-सीता के दाम्पत्य आदर्श का स्मरण किया जाता है, जबकि पारिवारिक मर्यादा और भाईचारे के प्रसंगों में राम-भरत संबंधों को आदर्श माना जाता है।

भारतीय समाज में राम का नाम सांत्वना, विश्वास और आध्यात्मिक आश्रय का भी प्रतीक है। मृत्यु के समय 'राम नाम सत्य है' का उच्चारण यह स्पष्ट करता है कि भारतीय लोक चेतना में राम जीवन और मृत्यु दोनों के सांस्कृतिक सहचर हैं।

राम कथा की यह लोक व्यापकता भारतीय संस्कृति की उस जीवन दृष्टि को व्यक्त करती है, जिसमें धर्म केवल पूजा-पद्धति नहीं, बल्कि व्यवहार, संवेदना और लोक मंगल का आधार है।

आधुनिक संदर्भों में राम की प्रासंगिकता

वर्तमान समय का समाज तीव्र भौतिकवाद, सांस्कृतिक विघटन, पारिवारिक असंतुलन और नैतिक पतन जैसी गंभीर समस्याओं से जूझ रहा है। आधुनिक मनुष्य के जीवन में आर्थिक प्रगति तो बढ़ी है, किंतु आत्मीयता, संयम और सामाजिक उत्तरदायित्व का संकट भी गहराया है। ऐसे समय में राम का आदर्श पुनः अत्यंत प्रासंगिक हो उठता है। राम भारतीय संस्कृति के ऐसे आदर्श पुरुष हैं, जिनके जीवन में सत्य, मर्यादा, त्याग, करुणा और लोक कल्याण का अद्‌भुत समन्वय दिखाई देता है। वे सत्ता और वैभव से अधिक धर्म और कर्तव्य को महत्व देते हैं।

"रघुकुल रीति सदा चली आई। प्राण जाए पर बचन न जाई॥"(अयो.का.-14)

निष्कर्ष

लोक परम्परा में भगवान श्री राम भारतीय संस्कृति, लोक चेतना और मानवीय मूल्यों के ऐसे शाश्वत प्रतीक हैं, जिनकी उपस्थिति भारतीय समाज के प्रत्येक स्तर पर अनुभव की जा सकती है। राम केवल धार्मिक श्रद्धा के केंद्र नहीं, बल्कि भारतीय जीवन दर्शन, नैतिक मर्यादा, सामाजिक समरसता और सांस्कृतिक संतुलन के आधार स्तंभ हैं।

लोक गीतों, लोक कथाओं, राम लीलाओं तथा सांस्कृतिक परम्पराओं में राम की निरंतर उपस्थिति भारतीय संस्कृति की गहरी जड़ों को अभिव्यक्त करती हैं। विश्व के अनेक देशों में राम कथा के विविध स्वरूपों की उपस्थिति यह सिद्ध करती है कि राम सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों के प्रतिनिधि हैं।

वर्तमान समय में जब समाज नैतिक संकट, सांस्कृतिक विघटन और मानवीय संवेदनहीनता जैसी समस्याओं से जूझ रहा है, तब राम के आदर्श पुनः अत्यंत प्रासंगिक हो उठते हैं। अतः यह कहा जा सकता है कि लोक परम्परा में प्रतिष्ठित राम भारतीय सांस्कृतिक चेतना की जीवित आत्मा हैं, जो समाज को नैतिक दिशा, सांस्कृतिक आधार और मानवीय संवेदना प्रदान करते हैं।

संदर्भ सूची

1. बुल्के, कामिल (1997) : *रामकथा : उत्पत्ति और विकास* (5वाँ संस्करण) हिन्दी परिषद प्रकाशन, प्रयागराज।
2. द्विवेदी, हजारीप्रसाद (2014) : *हिन्दी साहित्य की भूमिका* (12वाँ संस्करण) राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली।
3. नागर, अमृतलाल (2018) : *मानस का हंस* (18वाँ संस्करण) राजपाल एंड संस, नई दिल्ली।
4. प्रेमशंकर (2016) : *भक्तिकाव्य की सामाजिक-सांस्कृतिक चेतना* (3रा संस्करण) वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
5. शुकदेवानन्द, स्वामी (2012) : *राम राज्य की ओर* (2रा संस्करण) मुमुक्षु आश्रम प्रकाशन, शाहजहाँपुर।
6. तुलसीदास, गोस्वामी (2019) : *रामचरितमानस* (89वाँ संस्करण) गीता प्रेस, गोरखपुर।
7. तुलसीदास, गोस्वामी (2017) : *विनयपत्रिका* (22वाँ संस्करण) गीता प्रेस, गोरखपुर।
8. वाल्मीकि (2016) : *वाल्मीकि रामायण* (14वाँ संस्करण) गीता प्रेस, गोरखपुर।

9. *मनुस्मृति* (2015) : चौखम्बा संस्कृत संस्थान, वाराणसी।

10. *श्रीमद्भगवद्गीता* : (2018). गीता प्रेस, गोरखपुर।